14

तिङन्त स्वर

संस्कृत व्याकरण जगत में वैदिक व्याकरण और लौकिक व्याकरण विद्यमान है। वैदिक साहित्य में वैदिक व्याकरण की अत्यधिक प्रमुखता है। और वहाँ स्वर प्रकरण ही अत्यधिक सुन्दर है। स्वर प्रकरण में प्रकृति प्रत्ययों के स्वर विषय में चर्चा की गई है। पूर्व के पाठों में हमारे प्रातिपदिक स्वर, धातुस्वर, समासस्वर, फिट्-स्वर, प्रत्यय स्वर की आलोचना है। इस पाठ में तिङन्त स्वर को आश्रित करके विस्तार से आलोचना की है। तिङ्प्रत्यय जिनके अन्त में है, वे तिङन्त पद है। जैसे - भवति, गच्छति, बभूव इत्यादि पद है। इस प्रकरण में तिङन्त पदों का क्या स्वर विशेष है इस आलोचना का विषय है। तिङन्त में स्वर विषयक सूत्रों की अच्छी प्रकार से आलोचना की है। और उदाहरण की सङ्गति दिखाई गई। उससे तिङन्त में स्वर निषेध विधायक सूत्रों की भी आलोचना है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- तिङन्त स्वर विषय में विस्तार से जान पाने में;
- तिङन्त स्वर विधायक सूत्रों की व्याख्या लिख पाने में;
- तिङन्त स्वर निषेध विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- तिङन्त में कब स्वर का परिवर्तन होता है इस विषय में जान पाने में;
- किस अव्यय के योग में क्या स्वर होता है इस विषय में जान पाने में।

14.1 तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः॥ (८.१.२७)

सूत्र का अर्थ – तिङन्त पद से उत्तर कुत्सन आभीक्ष्ण्य अर्थ में वर्तमान गोत्रादिगण में पठित पदों को अनुदात होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इससे अनुदात्त स्वर का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद है। तिङः यह पञ्चम्यन्त पद है। गोत्रादीनि यह प्रथमान्त पद है। कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः यह सप्तम्यन्त पद है। कुत्सना इसका निन्दा यह अर्थ है। आभीक्ष्ण्यम् इसका पुनः पुनः यह अर्थ है। पदात् इस सूत्र का अधिकार है। अनुदात्तानि इस प्रथमा बहुवचनान्त पद की अनुवृति आती है। तिङः यह पद पदात् इस पद का विशेषण है। अतः तदन्तविधि से तिङन्त पद से यह अर्थ है। अतः इस सूत्र का यह अर्थ है – तिङन्त पद से परे गोत्रादि अनुदात्त होते है, कुत्सन आभीक्ष्ण्य गम्यमान होने पर गोत्रादिगण में गोत्र, ब्रुव, प्रवचन, प्रहसन, प्रयतन, पवन, यजन, प्रकथन, प्रत्यायन, प्रचक्षण, विचक्षण, अवचक्षण, स्वाध्याय, भूयिष्ठा इत्यादि शब्द पढ़े गए है। अतः सूत्र का अर्थ है – तिङन्त पद से परे इन गोत्रादि शब्द स्वरूप को अनुदात्त होते है कुत्सन आभीक्ष्ण्य अर्थ का गम्यमान होने पर।

उदाहरण– कुत्सन अर्थ में इस सूत्र का उदाहरण है –पचति गोत्रम्। आभीक्ष्ण्य में उदाहरण है – पचति पचति गोत्रम् इस सूत्र के दो उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– पचति गोत्रम् यहाँ पर तिङन्त से परे गोत्र शब्द विद्यमान है। वाक्य से निन्दा भी जानी जाती है। अतः प्रकृत सूत्र से गोत्र शब्द को अनुदात्त होता है। अपने कुल को पीटता है यह अर्थ है। पचति पचति गोत्रम् यहाँ पर तिङन्त से परे गोत्र शब्द विद्यमान है। यहाँ वाक्य से आभीक्ष्ण्य को जाना जाता है। अतः प्रकृत सूत्र से गोत्र शब्द को अनुदात्त होता है। विवाह आदि में बार –बार सुख करता है यह अर्थ है।

14.2 तिङ्ङतिङः॥ (८.१.२९)

सूत्र का अर्थ – अतिङ पद से उत्तर जो तिङ पद उसको अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर का धान है। यह दो पद वाला सूत्र है। तिङ् अतिङः ये सूत्र में आये पदच्छेद है। तिङ् यह प्रथमान्त पद है। अतिङः यह पञ्चम्यन्त पद है। पदात् इस सूत्र की अनुवृति है। सर्वम् इस प्रथमान्त अपदादौ इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तिङन्त इसका लाभ है। अतिङः यह पद पदात् इसका विशेषण है। अतः तदन्तविधि से अतिङन्त पद से यह अर्थ प्राप्त होता है। अनुदात्तम् इस प्रथमान्त की अनुवृति है। उससे इस सूत्र का यह अर्थ है – अतिङन्त पद से परे स्थित अपदादि में जो तिङन्त है वह सभी अनुदात्त होते है।

उदाहरण– अग्निमीळे इस सूत्र का यह एक उदाहरण है।

टिप्पणियाँ

सूत्र अर्थ का समन्वय- अग्निम् ईळे यह उदाहरण है। अग्निः यह अतिङन्त से परे तिङन्त ईळे यह पद है। अतः प्रकृत सूत्र से अपदादि में स्थित ईळे इस पद को अनुदात्त होता है।

14.3 अङ्गाऽप्रातिलोम्ये॥ (८.१.३३)

सूत्र का अर्थ - अङ्ग शब्द से युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। दो पद वाला यह सूत्र है। अङ्ग यह अव्ययपद है। अप्रातिलोम्ये यह सप्तम्यन्त पद है। न प्रातिलोम्यम् अप्रातिलोम्यं तस्मिन् अप्रातिलोम्ये यहाँ पर नञ्तत्पुरुष समास है। अप्रातिलोम्ये इसका अनुकूलता गम्यमान हो यह अर्थ है। पदात् यह अधिकार पञ्चम्यन्त से व्यत्यय है। न इस अव्ययपद की अनुवृति है। तिङ्ङतिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तिङन्त पद यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः अङ्ग इससे युक्त तिङन्त पद को अनुदात्त नहीं होता है यह अर्थ है।

उदाहरण- अङ्ग कुरु इस सूत्र का यह एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ अङ्ग इससे युक्त कुरु यह तिङन्त पद है। कृ धातु से परस्मैपद लोट् लकार में मध्यम पुरुष एकवचन में कुरु यह रूप है। अतः अङ्ग इस अव्यय से युक्त कुरु इस तिङन्त पद को अनुदात्त नहीं होता है।

14.4 हि च॥ (८.१.३४)

सूत्र का अर्थ - हि से युक्त तिङन्त को भी अप्रातिलोम्य अर्थ में गम्यमान होने पर अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। यह दो पद वाला सूत्र है। हि यह अव्यय है। च यह भी अव्यय पद है। अङ्गप्रातिलोम्ये इस सूत्र से अप्रातिलोम्ये इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। न प्रातिलोम्यम् अप्रातिलोम्यं, तस्मिन् अप्रातिलोम्ये यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। अप्रातिलोम्ये इस सूत्र से अनुकूलता गम्यमान हो यह अर्थ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। अनुदात्तम् यह प्रथमान्त और न यह अव्ययपद अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तिङन्त यह प्राप्त है। इस प्रकार हि युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता अनुकूलता गम्यमान होने पर यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण- आ हि ष्मा याति यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- याति यह हि शब्द युक्त तिङन्त है। अतः उससे परे याति यह अनुदात्त नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. कुत्सन आभीक्ष्ण्य के गम्यमान होने पर गोत्रादि को किस सूत्र से अनुदात्त होता है?
2. तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः इस सूत्र का कुत्सन अर्थ में क्या उदाहरण है?
3. अग्निमीळे यहाँ पर किससे सभी को अनुदात्त होता है?
4. तिङ्तिङः इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
5. अङ्ग कुरु यह किस सूत्र का उदाहरण है?
6. हि च यहाँ पर हि यह क्या है?
7. हि शब्द युक्त तिङन्त को कैसे अनुदात्त नहीं होता है?

14.5 छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्॥ (८.१.३५)

सूत्र का अर्थ – हि से युक्त साकाक्ष अनेक तिङन्त को भी अनुदात्त नहीं होता है, छन्द में।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर का निषेध होता है। ये चार पदवाला सूत्र है। छन्दसि अनेकम् अपि साकाक्षम् ये सूत्र में आये पदच्छेद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। अनेकम् यह प्रथमान्त पद है। अपि यह अव्ययपद है। साकाक्षम यह प्रथमान्त पद है। हि च इस सूत्र से हि इस अव्ययपद की अनुवृति है। तिङ्ङतिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। न, अनुदात्तम् इन दो पदों की अनुवृति है। इसी प्रकार हि शब्द से युक्त परस्पर साकाङ्क्ष अनेक तिङन्त पदों को अनुदात्त नहीं होता है वेद में यह इस सूत्र का अर्थ हुआ।

उदाहरण– अनृतं हि मत्तो वदति पाप्मा चौनं युनाति यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यहाँ वदति यह युनाति यह दोनों तिङन्त हि शब्द से युक्त है। और भी तिङन्त की परस्पर साकाङ्क्ष है। अतः यहाँ तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.6 उपसर्गव्यपेतं च॥ (८.१.३८)

सूत्र का अर्थ – यावत् और यथा से युक्त, एवं उपसर्ग से व्यवहित अन्तर तिङ् को अनुदात्त नहीं होता है, पूजा विषय में।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। उपसर्गव्यपेतम् यह प्रथमान्त पद है। और उसका उपसर्ग से व्यवहित यह अर्थ है। च यह अव्ययपद है। यावद्यथाभ्यामिति सूत्र की अनुवृति है। यावत् च यथा च यावद्यथे ताभ्यामिति यावद्यथाभ्याम् यहाँ

टिप्पणियाँ

द्वन्द्वसमास है। पूजायां नान्तरम् इस सूत्र से पूजायाम् इस सप्तम्यन्त नान्तरम् इस प्रथमान्त दोनों पदों की अनुवृति है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। न, अनुदात्तं इन दो पदों की अनुवृति है। अतः यावद् यथा से युक्त उपसर्ग रहित तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है पूजा विषय में यह सूत्र का अर्थ यहाँ आता है। अर्थात् तिङन्त शब्द का उपसर्ग व्यवधान होने पर भी यावद् यथा से योग तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है, पूजा विषय गम्यमान होने पर।

उदाहरण– 'यावत् प्रपचति शोभनम्' यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यहाँ यावत्-शब्द से युक्त प्रपचति इस तिङन्त को प्र-इस उपसर्ग का व्यवधान है। यहाँ पूजायां नानन्तरम् इस सूत्र से पचति इस तिङन्त के अनुदात्त का निषेध नहीं होता है। उसको प्रकृत सूत्र से उस अनुदात्त का निषेध होता है।

14.7 तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्॥ (८.१.३९)

सूत्र का अर्थ– तु, पश्य,पश्यत, अह इनसे युक्त तिङन्त को पूजा विषय में अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। तुपश्यपश्यताहैः यह तृतीयान्त पद है। तुश्च पश्यश्च पश्यताः च अहः च इति तुपश्यपश्यताहाः तैः तुपश्यपश्यताहैः यहाँ द्वन्द्वसमास है। पूजायाम् यह सप्तम्यन्त पद है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। न अनुदात्तम् इन दो पदों की अनुवृति है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है – तु, पश्य, पश्यत, अह शब्द से युक्त तिङन्त पद को अनुदात्त नहीं होता है, पूजा विषय गम्यमान होने पर।

उदाहरण– आदहं स्वधाम तु पुनर्गर्भस्तु मेंरिरे ये इस सूत्र का उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यहाँ मेरिरे यह तिङन्त पद है। तु शब्द से अथवा अह शब्द से युक्त है। पूजा विषय भी यहाँ जाना जाता है अतः प्रकृतसूत्र से तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.8 शेषे विभाषा॥ (८.१.४१)

सूत्र का अर्थ– अहो इससे युक्त तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है, पूजा विषय से शेष में।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। शेषे यह सप्तम्यन्त पद है। विभाषा यह प्रथमान्त पद है। अहो च इस सूत्र से अहो इस ओदन्त अव्ययपद की अनुवृति है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। न, अनुदात्तम् इस पद की अनुवृति है। पूजायाम् इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है – अहो इस अव्यय से युक्त तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है, पूजा से शेष विषय गम्यमान होने पर।

उदाहरण- अहो कटं करिष्यति।

उदाहरण का समन्वय- यहाँ करिष्यति यह तिङन्त पद है। अहो इस अव्यय से युक्त भी है। किन्तु पूजा से भिन्न अर्थ जाना जाता है। अतः प्रकृत सूत्र से करिष्यति इस तिङन्त पद को अनुदात्त नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. 'छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. 'उपसर्गव्यपेतं च' इस सूत्र का उदाहरण लिखिए।
3. तु, पश्य, पश्यत, अह से युक्त तिङन्त को पूजा के विषय में किस सूत्र से अनुदात्त नहीं होता है?
4. अहो इस अव्यय से युक्त तिङन्त को किससे अनुदात्त नहीं होता है?
5. 'शेषे विभाषा' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. 'शेषे विभाषा' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिए।

14.9 लोपे विभाषा॥ (८.१.४५)

सूत्र का अर्थ - किम का लोप होने पर क्रिया के प्रश्न में अनुपसर्ग अप्रतिषिद्ध तिङन्त को विकल्प करके अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। दो पद वाले इस सूत्र में लोपे यह सप्तम्यन्त पद है। विभाषा यह प्रथमान्त पद है। 'किं क्रियाप्रश्ने अनुपसर्गम् अप्रतिषिद्धम्' इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृति है। किम् यह प्रथमान्त पद है। क्रिया प्रश्ने यह सप्तम्यन्त पद है। अनुपसर्गम् यह प्रथमान्त पद है। अप्रतिषिद्धम् यह प्रथमान्त पद है। निषिद्धं प्रतिषिद्धम् यह प्रतिषेध रहित तिङ्न्त को। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तिङन्त की प्राप्ति है। न, अनुदात्तम् इन दो पदों की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है - क्रिया के प्रश्न में किम का लोप होने पर उपसर्ग रहित तथा प्रतिषेध रहित तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- देवदत्तः पचत्याहोस्वित् पठति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ पठति पचति ये तिङन्त पद है। क्रिया के प्रश्न अर्थ में विद्यमान किम् शब्द का लोप हुआ। और पठति यह तिङन्त यहाँ उपसर्ग रहित प्रतिषेध है। अतः प्रकृत सूत्र के सामर्थ्य से पचति इस तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।

टिप्पणियाँ

14.10 किंवृत्तं च चिदुत्तरम्॥ (८.१.४८)

सूत्र का अर्थ - जिससे उत्तर चित् है, तथा जिससे पूर्व कोई शब्द नहीं है, ऐसा किंवृत्त शब्द से युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। अनुदात्त स्वर का निषेध इस सूत्र से होता है। किंवृत्तम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। किम् शब्द का वृत्त किंवृत्त है। च यह अव्ययपद है। चिदुत्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। चित् शब्द उत्तर जिससे वह चिदुत्तरम् यहाँ बहुव्रीहि समास है। जात्वपूर्वम् इस पूर्व सूत्र से अपूर्वम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अपूर्वम् इसका विद्यमान नहीं है पूर्व में यह अर्थ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तिङन्त यह अर्थ प्राप्त है। न यह अव्ययपद है, अनुत्तमम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अतः अपूर्वम् चिदुत्तरं किंवृत्तं तिङन्तं न अनुदात्तम् ये सूत्र का अन्वय है। उससे इस सूत्र का यह अर्थ है - अविद्यमान पूर्व चित् से उत्तर जो किंवृत्त उससे युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है। अर्थात् जिस किम् शब्द से पूर्व कोई भी पद नहीं है। और बाद में चित् शब्द विद्यमान है। उस प्रकार के किंवृत्त शब्द से युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- कश्चिद् भुङ्क्ते यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ जो किम् शब्द है। उससे पूर्व कोई भी पद नहीं है। और बाद में चिद शब्द विद्यमान है। और उससे युक्त तिङन्त भुङ्क्ते यह है। अतः प्रकृत सूत्र से उस तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.11 आहो उताहो चानन्तरम्॥ (८.१.४९)

सूत्र का अर्थ - अविद्यमान पूर्ववाले आहो उताहो से युक्त जो व्यवधान रहित तिङन्त है, उसको अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। यह चार पद वाला सूत्र है। आहो यह अव्ययपद है। उताहो यह अव्ययपद है। च यह भी अव्ययपद है। अनन्तरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। न अन्तरम् अनन्तरम् यहाँ नञ्तत्पुरुषसमास है। जात्वपूर्वम् इस पूर्वसूत्र से अपूर्वम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अपूर्वम् इसका विद्यमान नहीं है पूर्व में यह अर्थ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त यह प्राप्त होता है। न यह अव्ययपद है, अनुत्तमम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - आहो उताहो इन अविद्यमान पूर्व से युक्त अनन्तर तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है। अर्थात् पूर्व में कोई भी पद नहीं है उन दोनों के, इस प्रकार के आहो उताहो इन अव्ययों से युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- आहो उताहो वा भुङ्क्ते ये इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- इस उदाहरण में आहो उताहो ये दो अव्यय है। उन दोनों से पहले कोई भी पद नहीं है। किन्तु भुङ्क्ते यह तिङन्त आहो उताहो इन अव्ययों से युक्त है। अतः प्रकृत सूत्र से भुङ्क्ते यहाँ तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.12 शेषे विभाषा॥ (८.१.५०)

सूत्र का अर्थ - इन दो से युक्त व्यवधान में तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इससे विकल्प से अनुदात्त स्वर होता है। यह दो पद वाला सूत्र है। शेषे यह सप्तम्यन्त पद है। शेषे इसका अनन्तर से भिन्न यह अर्थ है। विभाषा यह प्रथमान्त पद है। आहो उताहो चानन्तरम् इस सूत्र से आहो उताहो इन दो अव्ययपद की यहाँ अनुवृति है। जात्वपूर्वम् इस सूत्र से अपूर्वम् इस प्रथमान्त सुबन्त पद की अनुवृति है। अपूर्वम् इसका अविद्यमान पूर्व से यह अर्थ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त सुबन्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त इस पद को लाभ होता है। न अनुदात्तम् इन दो पदों की अनुवृति है। उससे आहो उताहो इन अव्यय पूर्व से युक्त तिङन्त को शेष में विकल्प से अनुदात्त होता है यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है। अर्थात् आहो उताहो इनसे युक्त व्यवधान तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है।

उदाहरण- आहो देवः पचति यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- इस उदाहरण में पचति यह तिङन्त पद है। आहो इस अव्यय से युक्त है। किन्तु तिङन्त पद को व्यवधान है। अतः प्रकृत सूत्र से विकल्प से अनुदात्त होता है।

14.13 गत्यर्थलोटा लृण्ण चेत्कारकं सर्वान्यत्॥ (८.१.५१)

सूत्र का अर्थ - गति अर्थ वाले धातुओं को लोट् लकार से युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है, यदि कारक सारा अन्य न हो तो।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। इस सूत्र में छ पद है। गत्यर्थलोटा लृट् न चेत् कारकं सर्वान्यत् ये सूत्र में आये पदच्छेद है। गत्यर्थलोटा यह तृतीय एकवचनान्त पद है। लृट् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। न यह अव्ययपद है। चेत् यह अव्ययपद है। कारकम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। सर्वान्यत् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। गति अर्थ जिसका वह गत्यर्थ यहाँ बहुव्रीहि समास है। गति अर्थ है जिसका वह गत्यर्थ यहाँ शाकपार्थिव आदि के समान समास। गत्यर्थः चासौ लोट् च इति गत्यर्थलोट्, तेन गत्यर्थलोटा यहाँ कर्मधारय समास है। गत्यर्थलोटा युक्त यह अर्थ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त सुबन्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त को यह पदलाभ होता है। न यह अव्यय है, अनुदात्तम् इस प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है - गति अर्थ वाले लोट लकार से युक्त लृडन्त जो तिङन्त उसको अनुदात्त नहीं होता है, जहाँ कारक में लोट् लकार है वहाँ पर भी। अर्थात् जिस स्थान में कर्तरि कर्मणि

टिप्पणियाँ

वा लोट् होता है, उसी ही स्थान में यदि लृट् लकार हो तो गति अर्थ वाले लोट् लकार युक्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- आगच्छ देव ग्रामं द्रक्ष्यसि एनम् यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ कर्ता में लोट् लकार है। उसी ही अर्थ में लृट् लकार है। आगच्छ यह गत्यर्थ लोट् लकार युक्त तिङन्त है। अतः प्रकृत सूत्र से आगच्छ इस लोट् अन्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.14 लोट् च॥ (८.१.५१)

सूत्र का अर्थ - गति अर्थ वाले लोट् लकार युक्त लोडन्त तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। इस में दो पद है। लोट् यह प्रथमान्त पद है। लोट् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से लोट् अन्त यह लाभ हुआ। च यह अव्ययपद है। गति अर्थ लोटा लकार को लृण्ण चेत्कारकं सर्वान्यत् इस सूत्र से गत्यर्थ लोट् लकार है, चेत् कारकम्, सर्वान्यत् इन पदों की अनुवृति है। गत्यर्थलोटा यह तृतीयान्त पद है। गतिः अर्थः यस्य सः गत्यर्थः यहाँ बहुव्रीहि समास है, गत्यर्थः अर्थः यस्य इति गत्यर्थः यहाँ शाकपार्थिव आदि के सामान समास। गत्यर्थः चासौ लोट् इति गत्यर्थलोट् तेन गत्यर्थलोटा यहाँ कर्मधारय समास है। लृट् यह प्रथमान्त पद है। न यह अव्ययपद। चेत् यह अव्ययपद है। कारकम यह प्रथमान्त पद है। सर्वान्यत् यह अव्ययपद है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह प्राप्त होता है। अनुदात्तम इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। इस प्रकार गत्ति अर्थ वाले लोट् से युक्त जो लोडन्त तिङन्त पद है, उसको अनुदात्त नहीं होता यह सूत्र अर्थ होता है।

उदाहरण- आगच्छ देव ग्रामं पश्य।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ पश्य यह तिङन्त लोडन्त है। आगच्छ यह गति अर्थ वाले लोट् से युक्त तिङन्त भी है। अतः प्रकृत सूत्र से पश्य यहाँ तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.15 हन्त च॥ (८.१.५४)

सूत्र का अर्थ - हन्त से युक्त सोपसर्ग उत्तमपुरुष को छोड़कर लोडन्त तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। अनुदात्तस्वर का इस सूत्र से विधान है। हन्त यह अव्ययपद है। च यह भी अव्यय पद है। विभाषितम् सोपसर्गमनुत्तमम् इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृति है। विभाषितम् यह प्रथमान्त पद है। सोपसर्गम् यह भी प्रथमान्त पद है। अनुत्तमम् यह प्रथमान्त पद है। न उत्तमम् इति अनुत्तमम् यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। और वह उत्तम पुरुष से भिन्न है यह अर्थ है। लोट् च इस सूत्र से लोट् यहाँ प्रथमान्त पद की अनुवृति है। लोड् यह प्रत्यय संज्ञक है। अतः प्रत्यय ग्रहण

की परिभाषा से लोन्तम यह लाभ है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। अनुदात्तम् इस पद की अनुवृति है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - हन्त इससे युक्त लोडन्त अनुत्तम तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है। अर्थात् हन्त इस शब्द से युक्त उपसर्ग पूर्वक को लोट् विभक्त्यन्त अनुदात्त को विकल्प से होता है, किन्तु उत्तम पुरुष को नहीं होता है।

उदाहरण- हन्त प्रविश यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यहाँ हन्त इससे युक्त है, प्रविश यहाँ तिङन्त पद है। और उपसर्ग पूर्वक भी है। किन्तु उत्तम पुरुष नहीं है। अतः प्रकृतसूत्र सामर्थ्य से यहाँ अनुदात्त विकल्प से होता है।

14.16 यद्धितुपरं छन्दसि॥ (८.१.५६)

सूत्र का अर्थ - यत परक ही परक तथा तु परक तिङन्त को छन्द विषय में अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है, यद्धितुपरम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यच्च हि च तुश्च इति यद्धितु यहाँ समाहारद्वन्द्व समास है, उससे परे यद्धितुपरम् यहाँ पञ्चमीतत्पुरुष समास है। यत शब्द से परे हि शब्द से परे तु शब्द से परे यह अर्थ है। छन्दसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्तम यह लाभ है। न यह अव्ययपद है, अनुदात्तम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद इन दो की अनुवृति है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है - यत शब्द से परे ही शब्द से परे तु शब्द से परे तिङन्त को छन्द विषय में अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- उघ्दसृजो यर्दङ्गिरः। उशन्ति हि। आख्यास्यामि तु ते इत्यादि यहाँ उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उशन्ति यहाँ यह तिङन्त हि शब्द से युक्त है। अतः उसको अनुदात्त नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. 'लोपे विभाषा' इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
2. 'पचति आहोस्वित् पठति' ये किस सूत्र के उदाहरण है?
3. 'शेषे विभाषा' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
4. गति अर्थवाले लोट् युक्त लोडन्त पद को कैसे अनुदात्त नहीं हुआ?

टिप्पणियाँ

5. 'आगच्छ देव ग्रामं पश्य' ये किस सूत्र का उदाहरण है?

6. 'हन्त च' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिए?

7. हन्त इससे युक्त अनुदात्त लोडन्त को विकल्प से अनुदात्त किस सूत्र से होता है?

14.17 चादिषु च॥ (८.१.५८)

सूत्र का अर्थ – च, वा आदि चादियों के परे रहते भी गति भिन्न पद से उत्तर तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र का अवतरण– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। ये सूत्र दो पदवाला है। चादिषु यह सप्तम्यन्त पद है। चकारः आदिः येषां ते चादयः तेषु चादिषु यहाँ बहुव्रीहि समास है। च यह अव्ययपद है। चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्रेडितेष्वगतेः इस सूत्र से अगतेः इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। न गतिः अगतिः तस्मात् अगतेः यहाँ द्वन्द्व समास है। अगत्ति इसका अर्थ है– गति संज्ञा भिन्न से। तिङ्ङतिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त को प्राप्त होता है। अतः चादियों के परे गति से भिन्न उत्तर तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है यह सूत्र का अर्थ आता है।

उदाहरण– देवः पचति च खादति च ये इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यहाँ पचति खादति ये दो तिङन्त पद है। पचति इससे परे अगति संज्ञक चकार है। खादति इससे परे अगति संज्ञक चकार है। अतः पचति खादति इन दोनों के तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.18 चादिलोपे विभाषा॥ (८.१.६३)

सूत्र का अर्थ– चादियों के लोप होने पर प्रथम तिङन्त को विकल्प करके अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। चादिलोपे यह सप्तम्यन्त पद है। चकारः आदिः येषां ते चादयः चादीनां लोपः, चादिलोपः तस्मिन् चादिलोपे यहाँ बहुव्रीहिगर्भतत्पुरुष समास है। विभाषा यह प्रथमान्त पद है। चवायोगे प्रथमा इस सूत्र से प्रथमा इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। प्रथमा इससे विभक्ति इसका अन्वय है। अतः प्रथमा तिङ् विभक्ति यह अर्थ प्राप्त हुआ। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त को प्राप्त होता है। न यह अव्ययपद है, अनुदात्ततम् यह प्रथमान्त पद की अनुवृति है। अतः सूत्र का अर्थ होता है – च, वा, ह, अह आदि के लोप होने पर प्रथम तिङ् विभक्त्यन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण– इन्द्र वाजेषु नोऽव यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- इन्द्र वाजेषु नोऽव इस वाक्य में अव यह तिङन्त पद है। और यहाँ चादि का लोप हुआ। अतः यहाँ विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है।

14.19 यद्वृत्तान्नित्यम्॥ (८.१.६६)

सूत्र का अर्थ- यदवृत्त शब्द से उत्तर तिङन्त को नित्य ही अनुदात्त नहीं होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्त स्वर का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है, यद्वृत्तात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। यद्धत से इसका जिस पद में यत् शब्द है। उससे परे यह अर्थ है। नित्यम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। तिङ्तिङः इस सूत्र से तिङ् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त को प्राप्त है। न यह अव्ययपद है, अनुदात्तम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। इस प्रकार यद्वृत्त से उत्तर तिङन्त को नित्य अनुदात्त नहीं होता है, यह सूत्र का अर्थ है। अर्थात् जिस पद में यत् शब्द विद्यमान है, उससे परे जो तिङन्त पद को नित्य ही अनुदात्त नहीं होता है, यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण- यो भुङ्क्ते। यदर्द्यङ् वायुर्वाति यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यो भुङ्क्ते। यदर्द्यङ् वायुर्वाति यहाँ पर भुङ्क्ते और वाति ये दो तिङन्त पद है। दोनों ही यत शब्द से परे है। उसको प्रकृत सूत्र से यहाँ तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.20 पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः॥ (८.१.६७)

सूत्र का अर्थ- पूजन वाची शब्दों से उत्तर काष्ठ आदि पूजित वाची को अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर का विधान है। इस सूत्र में चार पद है। पूजनात् पूजितम् अनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ये सूत्र में आये पदच्छेद है। पूजनात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। पूजितम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। अनुदात्तम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। काष्ठादिभ्यः पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। काष्ठाशब्दः आदिः येषां ते काष्ठादयः तेभ्यः काष्ठादिभ्यः ये बहुव्रीहिसमास है। काष्ठादिगण में काष्ठा, दारुण, अमातापुत्र, वेश, अनाज्ञात, अनुज्ञात, अपुत्र, अयुत, अद्भुत, भृश, घोर, सुख, कल्याण, अनुक्त, इत्यादि शब्द पढ़े गए। सगतिरपि तिङ् इस परसूत्र में तिङ्ग्रहण से यह सूत्र सुप् विषयक है। अतः सुप् यह प्रथमान्त पद को प्राप्त होता है। सुप् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से सुबन्त को प्राप्त है। अनुदात्तम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। पूजनात् इस पद को काष्ठादि यहाँ पर बहुवचनान्त का अन्वय है। अतः सूत्र का अर्थ होता है - पूजन के लिए काष्ठादि पूजित सुबन्त को अनुदात्त होता है। अर्थात् पूजनार्थ के लिए काष्ठादि शब्द से परे पूजित सुबन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- काष्ठाध्यापकः यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय- इस उदाहरण में काष्ठादिगण में पढ़ा गए है, काष्ठ शब्द पूजित अर्थ में विद्यमान है। और सुबन्त पद भी है। अतः प्रकृत सूत्र से उस सुबन्त को अनुदात्त नहीं होता है।

14.21 गतिर्गतौ॥ (८.१.७०)

सूत्र का अर्थ– गत्तिसंज्ञक के परे रहते गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पदवाला है। गतिः गतौ ये सूत्र में आये पदच्छेद है। गतिः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। गतौ यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। अनुदात्तम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। गतिः इसकी गतिश्च इस सूत्र से विधियमान प्र आदि की गतिसंज्ञक और उपसर्ग कहलाते है। अतः गतिसंज्ञक के परे गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है, यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण– अभ्युद्धरति यह इस सूत्र को एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– अभ्युद्धरति यहाँ पर हरति इस तिङन्त, अभि ये गतिसंज्ञक उद् यह भी गतिसंज्ञक पद है। उद् यह भी गतिसंज्ञक पद है, अभि इस गतिसंज्ञक पद से परे है। अतः उद् इस गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है प्रकृतसूत्र से।

14.22 तिङि चोदात्तवति॥ (८.१.७१)

सूत्र का अर्थ– उदात्तवान तिङन्त के परे रहते भी गतिसंज्ञक को निघात होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर होता है। इस सूत्र में तीन पद है, तिङि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। उदात्तवति यह भी सप्तमी एकवचनान्त पद है। गतिर्गतौ इस सूत्र से गतिः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तिङि यहाँ तिङ् यह प्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण की परिभाषा से तिङन्त में यह अर्थ प्राप्त होता है। अनुदात्तम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अतः सूत्र का यह अर्थ होता है – उदात्तवान तिङन्त के परे रहते गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है।

उदाहरण– यत्प्रपचति यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।

सूत्र अर्थ का समन्वय– यहाँ प्र यह गतिसंज्ञक है। पचति यह तिङन्त उदात्तवान पद प्र इससे परे है। अतः प्रकृत सूत्र से प्र इस गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है।

पाठगत प्रश्न 14.4

1. चादिषु च इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
2. चादिलोपे विभाषा इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिए।
3. पूजनात्...इस सूत्र को पूर्ण कीजिए।
4. गतिसंज्ञक किसको कहते हैं?
5. 'तिङि चोदात्तवति' इस सूत्र से किस प्रकार तिङन्त के परे गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है?

पाठ का सार

इस पाठ में तिङन्त स्वर विषय में विशेष रूप से और विस्तार से आलोचना की है। तिङन्त स्वर विधायक कुछ सूत्रों की यहाँ आलोचना की है। धातु से तिङ्प्रत्यय से तिङन्त पद होता है। तिङन्त पदों का सामान्य रूप से अनुदात्तस्वर का ही विधान है। यहाँ पर कुछ सूत्रों के द्वारा तिङन्तस्वर का विधान है। कुछ सूत्रों के द्वारा तिङन्त में अनुदात्त स्वर का निषेध है। यहाँ सम्पूर्ण रूप से अट्ठारह सूत्रों की व्याख्या की है। कभी अव्यय से युक्त तिङन्त में स्वर का विधान है। कभी अपने आप ही स्वर का विधान है। अव्यय से युक्त तिङन्त में उदाहरण जैसे- अङ्ग कुरु इत्यादि। अपने आप जैसे -अग्निमीळे इत्यादि। तिङन्त आश्रित भी स्वर का विधान है जैसे - पचति गोत्रम् इत्यादि। तिङन्त से परे गोत्रादि अनुदात्त होता है। यहाँ व्याख्यान समय में गोत्रादि शब्दों का उल्लेख है। अतिङन्त से परे तिङन्त को अनुदात्त होता है। जैसे- अग्निमीळे इत्यादि। और तिङन्त से परे गतिसंज्ञक को अनुदात्त होता है। उदाहरण जैसे- अभ्युद्धरति इति। प्र आदि क्रियायोग में गतिसंज्ञक होते है। इसी प्रकार इस पाठ का विषय तिङन्तस्वर है।

पाठांत प्रश्न

1. 'तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. 'अङ्गाऽप्रातिलोम्ये' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. 'लोपे विभाषा' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. 'आहो उताहो चानन्तरम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. 'गत्यर्थलोटा...' इस सूत्र का अर्थ लिखकर उदाहरण की सङ्गति दिखाइए।
6. 'चादिलोपे विभाषा' इस सूत्र की व्याख्यान कीजिए।
7. 'तिङि चोदात्तवति' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. 'तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः' इस सूत्र से।
2. 'पचति गोत्रम्' यह है।
3. 'तिङ्ङतिङः' इस सूत्र से।
4. अतिङन्त पद से परे तिङन्त पद को सम्पूर्ण अनुदात्त होता है, 'तिङ्ङतिङः' इस सूत्र का अर्थ है।

5. 'अङ्गाऽप्रातिलोम्ये' इस सूत्र का उदाहरण है।
6. हि यह अव्ययपद है।
7. 'हि च' इस सूत्र से निषेध होता है।

14.2

1. हि इससे युक्त साकाक्ष अनेक भी तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है, वेद विषय में है।
2. यावत् प्रपचति शोभनम् यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।
3. 'तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्' इस सूत्र से।
4. 'शेषे विभाषा' इस सूत्र से।
5. अहो इससे युक्त तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है, पूजा विषय में।
6. अहो कटं करिष्यति यह शेषे विभाषा इस सूत्र का एक उदाहरण है।

14.3

1. किम का लोप होने पर क्रियाप्रश्न में अनुपसर्ग को प्रतिषेध रहित तिङन्त को विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है यह इस सूत्र का अर्थ है।
2. 'लोपे विभाषा' इस सूत्र का एक उदाहरण है।
3. 'आहो उताहो' से युक्त व्यवधानतिङन्त को विकल्प से अनुदात्त होता है।
4. 'लोट् च' इस सूत्र से निषेध होता है।
5. 'लोट् च' इस सूत्र का उदाहरण है।
6. 'हन्त प्रविश' यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।
7. 'हन्त च' इस सूत्र से होता है।

14.4

1. च, वा, अह आदि चादियों में तिङन्त को अनुदात्त नहीं होता है।
2. इन्द्र वाजेषु नोऽव यह इस सूत्र का एक उदाहरण है।
3. पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः यह सूत्र है।
4. प्र आदि का क्रियायोग में गतिसंज्ञक होते है।
5. उदात्तवान तिङन्त के परे रहते गति को अनुदात होता है।

॥ चौदहवाँ पाठ समाप्त॥